पद्मकोश

खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन,
बम्बई

संस्करण- सन् २००० सम्वत् २०५७

मूल्य ६ रुपये मात्र

Printed by Shri Sanjay Bajaj for M / s Khemraj Shrikrishnadass proprietors Shri Venkateshwar press Mumbai 400 004. at their Shri Venkateshwar press, 66, Hadapsar Industrial Estate, Pune-411013.

॥ श्रीः ॥

पद्मकोशः

वेरीनिवासिद्विजशालग्रामात्मजबुध
वसतिरामविरचित-

भाषाटीकासहितः

मुद्रक एवं प्रकाशकः

खेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,

खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, मुंबई - ४०० ००४.

॥ श्रीः ॥

अथ पद्मकोशानुक्रमणिका

इति अनुक्रमणिका समाप्ता ।

अथ पद्मकोश

भाषाटीकासहित

श्रीगणेशाय नमः ॥ गणेशंहरंपद्मयोनिंचनत्वा हरिंभारतींखेचरान्सूर्यपूर्वान् ॥ विलोक्याखिलं ताजिकं पद्मकोशं प्रवक्ष्येफलंवर्षलग्नेग्रहाणाम् ॥ १ ॥ अथप्रवक्ष्येयवनादिशास्त्रात्तन्वादिकानांरविपूर्वकाणाम् ॥ सामान्यतोभावफलंखगानांकौतूहलात्खेटविदांहिताय ॥ २ ॥

ग्रंथकर्त्ता अपने ग्रंथके आदिमें नमस्कारात्मक मंगल करता है. गणेशमिति–गणेशजी महादेवजी ब्रह्माजी विष्णु भगवान् सरस्वती सूर्यादि नवग्रह इन सबोंको प्रणाम करके संपूर्ण ताजिक ग्रंथ अर्थात् वर्षफल कहनेके ग्रंथोंको देखके वर्ष-लग्नमें (वर्षकुंडलीमें स्थितहुये) ग्रहोंका फल कहताहूं ॥ १ ॥ अब मैं यवनादिकशास्त्रोंको अर्थात् यवनताजिक आदि शास्त्रोंको देखके ज्योतिषी लोगोंके हितके वास्ते सूर्यादि ग्रहोंका लग्नादि

अथरविफलम्॥रविर्लग्नगोवातपित्तंकरोतिक
लत्रांगपीडांशिरोर्तिश्वरोगम् ॥ विवादंजनानां
भयेद्गुप्तचिंतादशानेष्टकारीभवेद्धायनेस्मिन्॥
॥ १ ॥ कुटुंबाद्विरोधोनृपाद्भीतिकष्टंधनार्तिर्ध
नस्थेरवौमानवानाम्॥ पशूनांप्रपीडोदरेचाप
दाःस्युः स सौम्यान्वितोद्रव्यलाभं करोति २
तृतीयगोऽर्कोऽपिसहोदराणांपीडांकरोत्यस्यहि

१२स्थानोंका फल साधारण रीतिसे आनंद पूर्वक कहताहूं॥२॥ अथ सूर्यफलम् ॥ जिसकी वर्षकुंडलीमें लग्नमें सूर्य हो उसके वातपित्तकी बीमारी होवे स्त्रीके शरीरमें पीडा शिरमें दर्द और मनुष्योंके साथ विवाद (दंगा फिसाद) रहै और मानसी गुप्त चिंता रहै उस वर्षमें जब सूर्यकी दशा आवे तब उसका नेष्ट (अशुभ) फल होवे ॥ १ ॥ धन स्थानमें सूर्य हो तो कुटुंबसे विरोध हो राजासे भय हो कष्ट हो धनका दुःख रहै अर्थात् लाभ नहीं हो.गौ बैल आदि उसके पशुओंको पीडा हो उदरमें बीमारी हो और जो वह सूर्य शुभग्रहसे युक्त होके धनस्थानमें परे तो द्रव्यका लाभ करे ॥ २ ॥ वर्षलग्नमें तीसरे स्थानमे सूर्य हो तो इसके भाइयोंके शरीरमें पीडा करे

वर्षलग्ने ॥ पराक्रमंराजकृपांचलक्ष्मीरिपुक्षयं कीर्त्तिविवर्धनंच ॥ ३ ॥ पशोःपीडनंतुर्यसंस्थे रवौचकृषेःकर्म्मणांहानिरत्यंतपीडा ॥नृपाङ्गी तिकष्टंभवेन्मातृपीडोदरेहृद्यपिस्यात्सपीडाब्द मध्ये॥४॥ दिनेशेसुतस्थेसुतांगेषुपीडा सुबुद्धे श्चहानिर्विवादोजनानाम्॥भवेच्छोकमोहादि चांगेषुरोगोधनार्तिश्चभूपाद्भयंतद्दशायाम्॥५॥ रिपूणांविनाशोरुजोमातृपक्षेरवौषष्ठसंस्थेसु

पराक्रमकी वृद्धि हो राजाकी तर्फसे सुख हो लक्ष्मीकी प्राप्ति होवे क.र्ति बढे और शत्रु नष्ट होवे॥ ३ ॥चौथे स्थानमें सूर्य होवे तो पशुओंको पीडा करे खेतीके काममें हानि (नुकसान) हो अत्यन्त रोग हो और उसकी माताको पीडा हो तथा उसकेभी पेटमें और हृदयमें पीडा हो ॥ ४ ॥ सूर्य पांचवें घरमें हो तो पुत्रोंके शरीरमें पीडा हो अच्छी बुद्धिकी हानि हो मनुष्योंके साथ लडाई झगडा हो शोक, मोह,शरीरमें रोग, धनका नाश-राजासे भय ये सब फल तिस सूर्यकी दशामें होवें ॥५ ॥ छठे घरमें सूर्य होवे तो शत्रुओंका नाश हो मातृपक्ष अर्थात् मामा

स्वामिर्जनानाम् ॥ नृपान्मित्रपक्षाज्जयःस्वार्थ लाभोभवेद्द्रव्यलाभःक्रयेविक्रयेऽपि॥६॥कलत्रेऽर्कसंस्थेकलत्रांगपीडास्वकीयांगपीडातथा तद्दशायाम् ॥ शिरोर्तिश्चमार्गाद्भयंवैविवादोगुदेपादयोःपीडनंवर्षमध्ये ॥ ७ ॥ रवौ चाष्टमेबंधुदुःखंचकष्टं यशोविघ्नोव्याधिशोकं धनार्तिः ॥ कलत्रांगपीडासुतस्यांगरोगोव्रणं

नाना आदिकोंको पीडा हो स्वजनोंको सुखकी प्राप्ति हो राजासे लाभ मित्रजनोंसे लाभ और जय हो अपने कामकी सिद्धि हो खरीदने बेचनेके व्यवहारमें द्रव्यका लाभ हो ॥ ६ ॥ सातवें घरमें सूर्य हो स्त्रीके अंगमें पीडा हो और अपने अंगमेंभी पीडा हो और सूर्यकी दशा आवे तब शिरमें दर्द हो मार्गसे भय हो लडाई झगड़ा हो और उस वर्षमें गुदामें अथवा पैरोंमें पीडा हो ॥ ७ ॥ सूर्य आठवें घरमें हो तो भाइयोंका दुःख और कष्ट हो यश नष्ट होवे व्याधि, शोक, धनका नाश, स्त्रीके शरीरमें पीडा, पुत्रके शरीरमें पीडा और अपने शरीरमें व्रण (घाव) वातरोग, यह सब

वातपीडाभवेद्वर्षमध्ये ॥ ८ ॥ धर्मस्थितोर्के श्चसहोदराणांपीडाकरःक्लेशविवर्द्धनश्च ॥ धर्म प्रदोराज्ययशःप्रदः स्यात्तद्वर्षमध्येस्वदशांग तश्चेत् ॥ ९ ॥ यदादिनेशोगगनाश्रितःस्याद्रा ज्यार्थदोनामविवर्द्धनश्च ॥ हिरण्यभूम्यंबरला भकारीचतुष्पदांगेषुरुजोविवृद्धिः ॥ १० ॥ रवौ लाभगेलाभकारीनृपः स्याद्धनाप्तिश्चधान्यांब रंवैहिरण्यम् ॥ विलासादिसौख्यंरिपूणांविनाशः

फल उस वर्षमें होता है ॥ ८ ॥ वर्षकुण्डलीमें नवमें स्थानमें सूर्य स्थित होवे तो भाइयोंको पीडा हो दुःख बढे धर्मकी वृद्धि. राज्यसे यशका लाभ यह सब फल उस वर्षमें सूर्यकी दशा आवे तब होता है ॥ ९ ॥ वर्षकुण्डलीमें देशमें घरमें सूर्य होवे तो राजासे लाभ करे और धनकी प्राप्ति करे, नाम बढावे, सुवर्ण, भूमि, वस्त्र इन्होंका लाभ हो चौपाये (पशुओं) को रोग पीडा करै ॥ १० ॥ ग्यारहवें स्थानमें सूर्य हो तो राजासे लाभ हो धनकी प्राप्ति होवें, धान्य, वस्त्र, सुवर्ण इनकी प्राप्ति होवे विलासादिक

सुतस्यांगपीडाभवेदत्रवर्षे ॥ ११ ॥ व्ययस्थि
तश्चेत्खलुभास्करोऽसौस्त्रीविग्रहोद्वेगकृतांघ्रि
रोगम् ॥ व्ययंचशीर्षोदरनेत्रपीडांकरोतिचिं
तांरिपुभिर्विवादम् ॥ १२ ॥ इतिरविफलम्॥
अथचन्द्रफलम् ॥ तनुगतोननुचेद्रजनीकरोवि
कलताकफकृज्ज्वरपीडनम्॥भवतिपापखगा
न्वितदृग्यदाननुविनाशकरोबहुलव्ययः॥१॥

(स्त्रीभोगादिक) सुख होवे शत्रुओंका नाश हो और इस वर्षमें पुत्रके शरीरमें पीडा हो ॥ ११ ॥ बारहवें स्थानमें सूर्य होवे तो स्त्रीके शरीरमें उद्वेग पीडा हो और पावोंमें पीडा हो व्यय अर्थात् खर्च हो शिर, उदर, नेत्र इन्होंमें पीडा हो, चिंता (फिक्र) रहै और शत्रुओंके साथ विवाद (लडाई झगडा) होवे ॥ १२ ॥ इति रविफलम् ॥ अथ चन्द्रफलम् ॥ जिनके वर्षलग्नकी कुंडलीमें चंद्रमा १ में स्थित होवे उनके शरीरमें विकलता रहे, कफकी पीडा, ज्वरकी पीडा हो और पापग्रहोंसे युक्त हो अथवा पापग्रहोंकी दृष्टि होय तो शरीरको नष्ट करे और बहुतसा धन खर्च करावे ॥ १ ॥

कुटुंबाज्जयंमित्रपक्षाच्चलाभं धनाढ्यंधनस्थः शशांकः प्रकुर्यात् ॥ रिपूणांविनाशंतथानेत्र पीडा भवेदब्दमध्येनृपात्सौख्यकारी ॥ २ ॥
तृतीयेस्थितः शीतरश्मिर्यदास्यात्तदासोदरा णां भवेत्सौख्यकारी ॥ धनाप्तिंचपुण्योदयंगु प्तसौख्यंप्रतिष्ठाविवृद्धिंकरोतीहवर्षे ॥ ३ ॥
शशांकेचतुर्थे च भूपाज्जयः स्यात्कृषेः कर्मणां लाभवान्स्यात्सुखीच ॥ धनाप्तिः क्रयेविक्रये- चाब्दमध्येसुखं वाहनानांरिपोर्नाशनंच ॥४॥

धनस्थानमें चंद्रमा होवे तो कुटुंबसे जय, मित्रजनोंसे लाभ करै और धनवान् होय तथा शत्रुओंका नाश होवे नेत्रोंमें पीडा हो और तिस वर्षमें राजासे सुखकी प्राप्ति होवे ॥ २ ॥ जिसके वर्षलग्नमें तीसरे स्थानमें चंद्रमा होय उसके सहोदर भाइयोंको सुख होवे धनकी प्राप्ति पुण्यका उदय और गुप्तसुख प्रतिष्ठाकी वृद्धि ये सब फल होवें ॥ ३ ॥ वर्षकुंडलीमें चौथे घर चंद्रमा होय तौ राजासे जयकी प्राप्ति खेतीके कामोंमें लाभ

सुतस्थानगो रात्रिनाथः स्वबुद्धयाजयंमित्र पक्षाञ्चलाभंकरोति ॥ सुतांगेषुपीडाभवेत्पाप दृष्टिः सुतस्यापिसौख्यं यदासौम्यदृष्टिः॥५॥ अरिस्थानगोरात्रिनाथोरिपूणां विवादोविरोधोभवेन्नेत्रपीडा ॥ व्ययंव्यग्रतांगुप्तचिंतांतनोति कलत्रांगपीडां करोतीहवर्षे ॥ ६ ॥ कलत्रेशशांकोयदापापदृष्टोज्वरंवातपीडांभयंदारुणंच ॥ कलत्रांगपीडांकफोत्पत्तिबाधां स सौम्यान्वितोद्रव्यलाभंकरोति ॥ ७॥ निधन

और सुखकी प्राप्ति होवे ॥४॥ पांचवें घर चंद्रमा होय तो अपनी बुद्धिसे जयकी प्राप्ति करै और मित्र लोगोंसे लाभ करै जो पापग्रहोंकी दृष्टि होय तो पुत्रोंके शरीरमें पीडा करै और शुभग्रहोंकी दृष्टि होय तो पुत्रोंकोभी सुख होवे ॥ ५ ॥ यदि छठे घर चंद्रमा होय तो शत्रुओंका झगडा लडाई होवे और आंखदूखनी आवे खर्च होय मनमें संकल्पविकल्प गुप्त चिंता रहे इस वर्षमें स्त्रीके शरीरमें पीडा रहै ॥ ६ ॥ जो सातवें घर चंद्रमा हो और तहां पाप ग्रहोंकी दृष्टिभी होवै तो ज्वर, वातपीडा, दारुण भय, स्त्रीके शरीरमें पीडा, कफकी बीमारी ये सब होवें और जो शुभ ग्रहोंकी दृष्टि होय तो द्रव्यका लाभ करै ॥७॥ आठवें स्थानमें चन्द्रमा होय तो उस वर्ष

गतशशांकः कष्टवंतं करोति ज्वरवमनविकारं चोदरेगुप्तपीडाम्॥भवतिकफविकारोनेत्ररोगां गभंगो जलभयमरिवादोद्रव्यनाशोऽब्दमध्ये ॥ ८ ॥ पुण्योदयं धर्मगतःशशांको भाग्योद यंचार्थसमागमंच ॥ स्वगेहसौख्यं च रिपोर्वि नाशंव्यापारसौख्यंचकरोतिवर्षे ॥ ९ ॥ कर्मोदयंप्रकुरुतेगगनेशशांको द्रव्यागमंनृप कुलाद्रिपुपक्षनाशम् ॥ व्यापारतोबहुसुखंमह तीप्रतिष्ठाकीर्तिप्रवर्द्धनसुतांबरलाभमाशु१०॥

में कष्ट हो. ज्वर, वमन, उदररोग, कफरोग ये सर्वपीडा होवें नेत्ररोग अंगटूटना जलका भय शत्रुका विवाद द्रव्यका नाश ये सर्व होते हैं ॥ ८ ॥ जिसके वर्षलग्नमें नवम स्थानमें चंद्रमा होवे उसके भाग्यका उदय होवे धनकी प्राप्ति, अपने घरमें सुख, शत्रुका नाश, व्यापारमें सुख ये सब फल होवें ॥९॥ दशवें घरमें चंद्रमा होवे तो भाग्यका उदय करे, राजद्वारा धन की प्राप्ति, शत्रुओंका नाश, व्यापारमें बहुत सुख, बहुत प्रतिष्ठा, कीर्ति (यश) वृद्धि, पुत्रलाभ, वस्त्रलाभ ये फल शीघ्रही होतेहैं १०

रिपोर्नाशनंलाभसंस्थेशशांके बहुद्रव्यलाभंक्रये
विक्रयेऽपि॥नृपात्सौख्यलाभंसुतस्यागमंचप्र
तिष्ठाविवृद्धिर्भवेद्धायनेऽस्मिन् ॥११॥ शशां
कोव्ययस्थोरिपूणांप्रपीडांतथासद्व्ययंनेत्ररो
गंकरोति॥ विवादंजनानांमहाकष्टसाध्यांकफा
र्त्तिश्चगुल्मोदयंतत्रवर्षे॥१२॥इतिचन्द्रफलम्।
अथभौमफ०॥धरणिजनुषिलग्नेस्याद्व्रणंवात
पीडाभवतिरिपुविवादोनेत्रशीर्षेचरोगः॥ज्वर
वमनविकारंचांगनानांचकष्टंनृपभयमथलौहाद

जिसके वर्षमें ग्यारहवें घरमें चंद्रमा हो उसको खरीदने बेचनेके व्यवहारमें बहुत लाभ हो, राजासे सुख, पुत्रकी प्राप्ति, प्रतिष्ठाकी वृद्धि यह फल इस वर्षमें होता है ॥ ११ ॥ बारहवें स्थानमें चंद्रमा होय तो शत्रुओंकी तर्फसे पीडा हो श्रेष्ठकाममें द्रव्य खर्चहो और नेत्ररोग, मनुष्योंके साथ लडाई विवाद, महाकष्टसाध्य कफकी पीडा, गुल्मरोगकी उत्पत्ति ये सब फल होते हैं ॥ १२ ॥ इति चंद्रफलम् ॥ अथ भौमफलम् ॥ वर्षलग्नमें मंगल होय तो व्रण (घाव) वातकी बीमारी शत्रुओंके संग विवाद (झगडा) नेत्र और

ग्नितोवाभयंच॥१॥ धनस्थोधरण्यात्मजोद्र-
व्यनाशं शिरोर्तिजनानांविरोधंप्रकुर्यात् ॥ त-
थासर्पवह्न्योर्भयंशोकमोहौकलत्रेऽक्षिरोगंक
रोतीहवर्षे ॥ २ ॥ तृतीयस्थितेक्ष्मासुते
बांधवानां भवेदंगकष्टं सुखंवाहनानाम् ॥
रिपूणांविनाशस्तथाद्रव्यलाभो नृपान्मि-
त्रपक्षाज्जयोहायनेऽस्मिन् ॥ ३ ॥ चतुर्थेकु-
जोवह्निपीडाव्रणार्ती पशोः पीडनंव्यग्रतांके

शिरमें रोग, ज्वर और वमनका विकार, स्त्रियोंको पीडा, राजासे भय, लोहसे वा अग्निसे भय, ये अशुभ फल होवें ॥१॥ धन-स्थानमें मंगल होय तो द्रव्यका नाश हो, शिरमें पीडा हो, मनुष्योंके साथ विरोध हो सर्प तथा अग्निसे भय होय. शोक मोह स्त्रीकी आंखिमें बीमारी ये सब बात इस वर्षमें होवें ॥२॥ तीसरे स्थानमें मंगल स्थित होय तो भाई बंधुओंके शरीरमें कष्ट हो और सवारीका सुख हो शत्रुओंका नाश हो राजासे और मित्र लोगोंसे द्रव्यका लाभ हो यह सब फल उस वर्षमें होते-हैं ॥ ३ ॥ और जिस वर्षमें चौथे घर मंगल हो उसमें अग्निकी पीडा हो, व्रण (घाव) की पीडा हो, पशुओंमें पीडा हो, घवडाहट,

शकष्टम् ॥ कृषेःकर्मणाहानिमप्येवकुर्यात्क्रये विक्रयेचाब्दमध्येतथैव ॥ ४ ॥ सुतानांप्र-पीडाकुजेपंचमस्थेरिपूणांविवादोभवेद्व्यग्रता च ॥ स्वबुद्धेर्विनाशोभवेच्चाग्निघातः सशोकोदरेगुप्तपीडाब्दमध्ये ॥ ५ ॥ कुजः षष्ठगः शत्रुनाशंकरोतिस्वभूपाज्जयंमित्रपक्षाच्चलाभ-म् ॥ हयानांचसौख्यंभवेदंगनानांसुखंहाय-नेस्मिन्दशायांचतस्य ॥ ६ ॥ कलत्रे स्थितेस्यात्सुतस्त्रीषुरोगस्तथाचात्मनोमार्गतः

क्लेश, कष्ट, खेतीमें नुकसान और खरीदने बेचनेके काममें नुकसान (हानि) होवे ॥४॥ पांचवें घर मंगल होवे तो पुत्रों के शरीरमें पीडा हो,शत्रुओंके साथ विवाद हो,चित्त बिगडा रहे, अपनी बुद्धिका नाश हो, अग्निसे दुःखहो और शोक हो,उदरमें गुप्त रोग रहे यह सब फल इस वर्षमें होवे ॥ ५ ॥ जिस पुरुषके छटे घरमें मंगल होवे उसके शत्रुओंका नाश होवे और राजासे जयकी प्राप्ति होवे, मित्रजनोंसे लाभ हो, घोडोंका सुख हो, स्त्रियोंको सुख हो, यह सब फल इस वर्षमें जब इस मंगलकी दशा आवे तब होवे ॥ ६ ॥ सातवें घरमें मंगल होवे तो पुत्र

क्लेशकष्टम् ॥ तथावैरिपूणां विवादो जनानां दशानेष्टकारीभवेद्वायनेऽस्मिन् ॥ ७ ॥ कुजे चाष्टमेशत्रुपीडांगकष्टं व्रणस्योदयश्चांगनानां चरोगः ॥ धनानांविनाशो भवेच्छस्त्रघातस्त थान्यग्रतागुप्तचिंतानरस्य ॥ ८ ॥ धर्मस्थितेभूमिसुतेचवर्षे पुण्योदयोवित्तसमागमश्च ॥ भाग्योदयोमानविवर्द्धनंचमहाप्रतिष्ठाबहुला लाच तत्र ॥९॥ कर्मस्थितोभूतनयोऽब्दमध्ये कर्मोदयंचार्थसमागमंच ॥राज्यार्थलाभंचमहा

स्त्रीके शरीरमें रोग हो और मार्गमें दुःख संकट होवे, शत्रुओंके साथ वैर होवे और इस वर्षमें मंगलकी दशा आवे तब अशुभ फल हो ॥ ७॥ आठवें घर मंगल होवे तब शत्रुओंकी पीडा हो, शरीरमें कष्ट हो, व्रण (घाव) की उत्पत्ति हो, स्त्रियोंके शरीरमें रोग हो, धनका नाश हो शस्त्रसे कटना हो, घवडाहट रहे, गुप्त (मानसी) चिन्ता रहे ॥ ८ ॥ जिसवर्षमें नवमें घरमें मंगल हो उसमें पुण्यका उदय हो,धनकी प्राप्ति हो,भाग्यका उदय हो, मान बढे, महान् (बहुत) प्रतिष्ठा होवे ॥ ९ ॥ वर्ष कुंडलीमें दशवें घरमें मंगल होवे तो भाग्यका उदय हो, धनकी प्राप्ति

प्रतिष्ठांकरोतिमानंसुखसंपदश्च ॥ १० ॥ अव-
निजनुषिलाभेराज्यसौख्यागमश्चभवतिरिपुवि
नाशोमित्रपक्षाज्जयश्च ॥ हयगजसुहिरण्यंप्रा-
प्यते चाम्बराणितनयसुखविलासोजायते
र्स्मिश्चवर्षे ॥ ११ ॥ व्ययश्चापदाभूमिपुत्रे
व्ययस्थेभवेन्नेत्रपीडाच कर्णेविकारः ॥ शिरो-
र्तिर्जनानांविवादस्तथास्यात्कलत्रांगचिंता
भवेत्तत्रवर्षे ॥ १२ ॥ इति भौमफलम् ॥
अथ बुधफम् ॥ रजनिकरसुतःस्या

होवे, राज्यसे धन मिले, बहुत ज्यादे प्रतिष्ठा बढे, मान बढे, सुख संपत्तिकी प्राप्ति हो ॥ १० ॥ ग्यारहवें घर मंगल हो तो राज्यसे सुखकी प्राप्ति, शत्रुओंका नाश, मित्रजनोंसे लाभ, विजय घोडा, हाथी, सुवर्ण, वस्त्र इन्होंकी प्राप्ति हो, और इस वर्षमें पुत्रोंको सुखकी प्राप्ति होवे ॥ ११ ॥ बारहवें घर मंगल होवे तो नेत्रमें पीडा हो, कानमें विकार रहे शिरमें दर्द हो, मनुष्योंके साथ विवाद (झगडा) हो और स्त्रीके शरीरमें पीडा होवे॥ १२॥ इति भौमफलम् ॥ अथ बुधफलम् ॥ जिस वर्षमें लग्नस्थानमें बुध स्थित होवे उस वर्षमें बहुत लक्ष्मी प्राप्ति हो और स्त्रियोंको

छमगोहायनेस्मिन्बहुलबलविवृद्धियोंषितांचा
पिसौख्यम्॥भवतिरिपुविनाशोभूपपक्षाच्चला
भोधनजयसुखकारीमित्रलाभंकरोति ॥ १ ॥
धनस्थोयदिस्यात्सुतःशीतरश्मेर्भवेद्द्रव्यलाभः
कुटुंबाज्जयश्च॥रिपोर्नाशनंमानकीर्त्योश्चवृद्धिः
प्रतिष्ठाधिकाहायनेस्मिन्सुखंच ॥२॥ शशि
सुतश्चतृतीयगतोयदासकलतापविनाशकरस्त
दा ॥ भवतिमानविवृद्धिरथोयशःसुतसुखंप्रक
रोतिधनागमम् ॥३ ॥बुधश्चतुर्थःप्रकरोतिसौ

सुख होवे शत्रुओंका नाश हो राजासे लाभ हो धन बढे विजय हो सुख हो और मित्रलोगोंसे लाभ होवे ॥ १ ॥ धन स्थानमें बुध होवे तो द्रव्यका लाभ हो और कुटुंबसे विजयकी प्राप्ति हो शत्रुका नाश, मानवृद्धि, कीर्तिवृद्धि, अधिक प्रतिष्ठा, सुख यह सब फल इस वर्षमें हो ॥ २ ॥ जो तीसरे घर बुध होवे तो संपूर्ण संताप (दुःख) दूर होवे मानकी वृद्धि हो और यश बढे पुत्रकी प्राप्ति हो और धनका लाभ होवे ॥ ३ ॥ चौथे घरमें बुध होवे तो सुखकी प्राप्ति हो द्रव्यका आगमन हो

स्यंद्रव्यागमंमित्रसमागमंच ॥ गोभूहिरण्या-
दिसमागमंचमहासुखंवाहनमत्रवर्षे ॥४॥सु-
तभवनगतश्चेत्सोमपुत्रःसुतानांप्रसवसुखकरः
स्यादर्थलाभप्रदश्च॥भृतकजनसुखंस्याद्धेमस
स्यांबराणां सुखमपिनृपपक्षान्मित्रपक्षाज्ज
यश्च ॥५॥ रिपुस्थानसंस्थोरिपूणांविवादोभ
वेदंगनानांचकष्टंकरोति ॥ व्ययंव्यग्रतांस्वेश
रीरेचरोगंकफार्तिंमहत्कष्टमप्यत्रवर्षे ॥ ६ ॥

मित्रोंका आगमन हो गौ, भूमि, सुवर्ण, वाहन, इन्होंकी प्राप्ति हो और इस वर्षमें महान् सुख हो॥ ४ ॥ पांचवें घर बुध होवे तो पुत्रोंकी उत्पत्ति हो सुख करै धनका लाभ करै भृत्यजनोंसे सुख होवे सुवर्णकी प्राप्ति हो खेतीमें लाभ होवे वस्त्रोंका लाभ राजासे और मित्र लोगोंसे विजयकी प्राप्ति हो ॥ ५ ॥ छठे स्थानमें बुध होवे तो शत्रुओंका विवाद हो और स्त्रियोंको कष्ट हो खर्च बहुत होवे चित्तमें घबडाहट रहे शरीरमें रोग कफकी पीडा महान् कष्ट यह फल इस वर्षमें होते हैं ॥ ६ ॥

शशांकात्मजेसप्तमस्थेंगनानांविलासादिसौ-
ख्यंभवत्यत्रवर्षे ॥ प्रतिष्ठाधिकारोहिरण्यांब
राप्तिर्जयः सर्वदातद्दशायांतथैव ॥ ७ ॥ नि
शानाथपुत्रोयदारंध्रसंस्थोनरं मृत्युतुल्यंक-
फार्तिकरोति ॥ ज्वराणांप्रकोपोभवेन्नेत्रपीडा
भयंव्यग्रताहायनेतद्दशायाम् ॥ ८ ॥ धर्म
स्थितःशशिसुतः सुतलाभसौख्यमर्थागमंस
ततमंगलमाशुकुर्यात् ॥ भूपाज्जयोभवतिकी
र्तिविवर्द्धनंचभाग्योदयो रिपुविनाशमपी
हवर्षे ॥ ९ ॥

सातवें घरमें बुध होवे तो स्त्रियोंके संग भोग विलासका सुख हो और इस वर्षमें प्रतिष्ठा (मुरातबा) ज्याद बढे, सुवर्ण और वस्त्रोंका लाभ हो सदा जय हो और बुधकी दशा आवे तव संपूर्ण उत्तम फल होवें ॥ ७ ॥ आठवें घरमें बुध होवे तो उस वर्षमें उस मनुष्यको मृत्युके समान कफकी पीडा हो ज्वरोंका कोप हो नेत्र दूखे भय हो चित्तमें घवडाहट रहै यह सब फल इस बुधकी दशामें अवश्य होते हैं ॥ ८ ॥ नवमें घर बुध स्थित होवे तो पुत्रका लाभ हो सुखकी प्राप्ति हो निरंतर धनकी प्राप्ति हो निरंतर मंगल बढे राजासे विजय मिले

गगनगःशशिजोयदिहायनेभवतिवाहनसौख्य करस्तदा॥सुतविवृद्धिरथापिधनागमोविलस नंचतथानृपतेर्जयः ॥१०॥ लाभाश्रितःशशि सुतोजयसंपदश्चधान्याम्बराणिबहुलानिकरो त्यवश्यम् ॥ कीर्तिंविवर्द्धनमनोर्थसमागमश्च स्याद्धायनेपशुविवर्द्धनमत्रलाभः ॥११॥ बुधे द्वादशस्थेरिपूणां विवादोव्ययेगुप्तचिंताचकर्णे

कीर्ति बढे भाग्योदय हो इस वर्षमें शत्रुका नाश हो ॥९॥ जिस वर्षमें बुध दशवें घरमें हो उस वर्षमें सवारीका सुख हो पुत्रोंकी वृद्धि हो धनका आगमन हो, भोगविलास, राजासे जयकी प्राप्ति यह सब फल हों ॥ १० ॥ ग्यारहवें घर बुध होवे तो विजय, संपत्ति, धान्य, वस्त्र इन सबोंकी बहुत वृद्धि होवे और कीर्ति बढे मनोरथ सिद्ध हो उस वर्षमें पशुओंकी वृद्धि और लाभ होवे ॥ ११ ॥ बारहवें घर बुध होवे तो शत्रुओंसे विवाद होवे खर्च हो गुप्तचिंता कानमें विकार यह फल हो और इस बुधकी दशामें यह अशुभ फल होता है नेत्रोंमें पीडा कफ

विकारः ॥ दशानेष्टकारीभवेन्नेत्रपीडाकफार्ति श्चकष्टंतथाहायनेस्मिन् ॥ १२ ॥ इतिबुधफलम् ॥ अथ गुरुफलम् ॥ जीवेलग्नगतेहयांबरसुखं प्राप्नोति वृद्धिं जयं जायासौख्यमथापि मौक्तिकधनंहेम्नश्चलाभोभवेत् ॥ १ ॥ कुटुंबराशौच गते सुरेज्येधनादिभोगाँल्लभतेमनुष्यः॥चतुष्पदानांचसमागमः स्यात्तद्धायनेभूपजनाच्चलाभः ॥२॥ तृतीयसंस्थःसुरराजमंत्रीभूपाज्जयं कीर्तिविवर्द्धनंच ॥सस्यांबराणांचतथाधनानांकरोति

रोग कष्ट इस वर्षमें होता है ॥ १२ ॥ इति बुधफलम् ॥ अथ गुरुफलम् ॥ लग्नमें बृहस्पति होवे तो घोडा, वस्त्र, इन्होंकी प्राप्ति विजय सुखकी प्राप्ति स्त्रीको सुखकी प्राप्ति मोती, धन, सोना इन्होंका लाभ हो ॥ १ ॥ कुटुंब अर्थात् दूसरे घरमें बृहस्पति स्थित होवे तो वह मनुष्य धन धान्यादिक भोगका लाभ पावे और चौपाये पशुओंका लाभ राजासे लाभ यह सब फल उस वर्षमें होता है ॥ २ ॥ तीसरे घरमें बृहस्पति होवे तो राजासे जयकी प्राप्ति, कीर्तिकी वृद्धि, खेती, वस्त्र, धन

वृद्धिंमहतींचवर्षे॥३॥सुरेज्यःसुखस्थः सुखंवाह
नानांक्रयेविक्रयेलाभकारीजनस्य॥भवेद्भूपपक्षा
ज्जयोहायनेऽस्मिन्महालाभदःस्यात्कृषेः कर्म्म-
णश्च ॥४॥सुतस्थानगोदेवमंत्रीसुतानांविवृद्धिः
स्वबुद्ध्याजयोहायनेऽस्मिन्॥रिपूणांविनाशःसु
खंचेष्टभोगांस्तथागोहिरण्याम्बराणिकरोति५॥
कष्टंरिपूणांरिपुगः सुरेज्योभयार्तिदोषान्कुरुतेनरा
णाम्॥भार्यांगपीडामथनेत्ररोगज्वरातिसारंप्रक

इन्होंकी बहुत वृद्धि यह सब फल इस वर्षमें होताहै ॥ ३ ॥ चौथे घरमें बृहस्पति होवे तो वाहनोंका सुख हो और खरीदने बेंचनेके व्यवहारमें लाभ हो राजद्वारसे विजयकी प्राप्ति और खेतीके काममें वहत विशेष लाभ हो ॥ ४ ॥ पांचवें घरमें बृहस्पति होवे तो पुत्रोंकी वृद्धि हो और अपनी बुद्धिके बलसे इस वर्षमें सब जगह जय पावे शत्रुओंका नाश, सुख, मनोवांछित भोग, गौ, सुवर्ण, वस्त्र इन्होंका लाभ होवे ॥ ५ ॥ छठे घरमें बृहस्पति होवे तो मनुष्योंको भयकी पीडा होती- है स्त्रीके शरीरमें पीडा और नेत्ररोग ज्वरातिसार यह सब

रोतिवर्षे ॥६॥ कलत्रेसुरेज्येकलत्राज्जनस्यसु
खंनिर्भयंशत्रुनाशंकरोति॥सुखंवाहनानांविला
सादिकंचनृपाल्लब्धलक्ष्मीर्भवेद्धायनेऽस्मिन्७
ज्वरवमनकफार्तिर्नैधनस्थेसुरेज्येबहुलकठि-
नरोगःकर्णयोर्नेत्रयोश्च ॥ भवतिभयमरीणामं
गनांगेषुकष्टंव्रणकृतबहुपीडाहायनेऽस्मिन्नरा
णाम् ॥ ८ ॥ वाचस्पतिर्धर्मगतोनरा
णांकरोतिधर्म्मं बहुलंसुखंच ॥ भाग्योदयं
चार्थसमागमंचतीर्थाटनंपुण्यमतिंप्रकुर्यात्॥

फल इस वर्षमें हो ॥ ६ ॥ सातवें घरमें बृहस्पति होवे तो स्त्रियोंसे सुखकी प्राप्ति, निर्भयता, शत्रुनाश, सवारीका सुख भोग, विलास, राजासे लक्ष्मीकी प्राप्ति यह संपूर्ण फल इस वर्षमें होताहै ॥ ७ ॥ आठवें घरमें बृहस्पति होवे तो ज्वर; वमन, कफकी पीडा, नेत्र और कानोंमें बहुत ज्यादे पीडा शत्रुओंका भय स्त्रियोंके शरीरमें कष्ट व्रण (घाव) की पीडा यह फल इस वर्षमें होताहै ॥ ८ ॥ नवमें घर बृहस्पति होवे तो मनुष्योंको बहुतसा सुख करै धर्मकी वृद्धि करावे भाग्यका उदय हो धनकी प्राप्ति हो तीर्थाटन और पुण्य करनेकी बुद्धि

॥ ९ ॥ व्योम्निस्थितश्चेत्सुरराजमन्त्रीहेमांब रामिंचजयंकरोति ॥ भूपप्रसादात्क्षितिगोध नाप्तिःस्याद्धायनेशत्रुविनाशनं च॥१०॥जयो मानवानांसुरेज्येचलाभेभवेद्वैगजानांहयाना- श्चलाभः ॥ सुतस्योदयोजायतेशत्रुनाशःप्रति ष्ठाविवृद्धिःसुतस्यापिसौख्यम्११रिःफेस्थितः सुरगुरुर्बहुलव्यथाकृत्कष्टप्रवादनृपभीतिकरोऽत्र- वर्षे ॥ नेत्रांगपीडनकफार्तिजनप्रवादंहानिर्भयं भवतिशोकविकारकारी॥१२॥इतिगुरुफलम्॥

उत्पन्न हो॥९॥दशवें घरमें बृहस्पति होवे तो सुवर्ण और वस्त्रकी प्राप्ति हो विजय हो राजाकी प्रसन्नतासे पृथ्वी, गौ, धन ये वस्तु मिलें और इस वर्षमें शत्रुओंका नाश हो ॥ १० ॥ ग्यारहवें घरमें बृहस्पाति होय तो हाथी घोडोंका लाभहो पुत्रकी उत्पत्तिहो शत्रुका नाश हो प्रतिष्ठा बढे पुत्रको सुख होवे ॥ ११ ॥ बारहवें घरमें बृहस्पति होवे तो बहुतसी पीडा हो कष्टलडाई, राजासे भय, नेत्रमें पीडा शरीरमें कफकी पीडा जनोंके साथ विवाद, हानि, भय, शोक, विकार यह फल होता है ॥१२॥ इति गुरुफलम् ॥

अथशुक्रफलम् ॥ तनुस्थानगोभार्गवश्चेदिह स्यात्प्रतिष्ठाविशेषंसमृद्ध्यागमंच॥रिपूणांविनाशंतथाभूपमानंजयंभूषणादीन्नराणांकरोति॥ ॥१॥धनस्थेकवौधान्यलाभोधनाप्तिर्भवेन्म्लेच्छजात्याःसुखंसंपदश्च॥नरोराजतुल्योभवत्यत्रवर्षे पशूनांहयानांगृहेस्यात्सुखंच ॥२॥ भृगुस्तृतीयश्चसहोदराणांसुखंप्रकुर्याद्विविधैःप्रकारैः॥अर्थागमंकीर्तिविवर्द्धनञ्चजनोपकारंच करोतिवर्षे ॥ ३ ॥ प्रथमदेवगुरुः सुखगोयदा

॥ अथ शुक्रफलम् ॥ ॥ वर्षकुंडलीमें जो लग्नमें शुक्र स्थित होवे तो विशेष प्रतिष्ठा हो, संपत्ति बढे शत्रुओंका नाश हो राजासे मान मिले विजयप्राप्ति आभूषणप्राप्ति यह फल होता है ॥ १ ॥ दूसरे घरमें शुक्र होवे तो धान्यका लाभ हो धनकी प्राप्ति हो म्लेच्छजातिसे सुख संपत्तिकी प्राप्ति होवे, इस वर्षमें वह मनुष्य राजाकी समान होवे पशु और घोडेका सुख हो ॥ २ ॥ तीसरे घरमें शुक्र होवे तो भाइयोंको अनेक प्रकारसे सुख हो धनकी प्राप्ति हो कीर्ति बढे और कई अन्य मनुष्योंका उपकार करै ॥ ३ ॥ चौथे स्थानमें शुक्र होवे तो

सुखकरः कृषिवाहनयोस्तदा॥ धरणिलब्धिसुवर्णसमागमो भवति भूपसमो मनुजस्तदा॥४॥ सुतानां विवृद्धिर्भृगुः पंचमस्थो भयक्लेशचिंतापदानां विनाशः॥ रिपूणां विनाशं तथा वर्षलग्ने महाभोगवंतं धनाढ्यं करोति॥ ५॥ अरिस्थानगो ह्यायने दैत्यमंत्री जनानां विवादो रिपोर्भीतिकष्टम्॥ भवेद्गुप्तचिंता ज्वरोगप्रपीडा शिरोर्तिश्च नेत्रोदरे पीडनं च॥६॥ कलत्रे कविश्चेत्स्थितो वर्षलग्ने कलत्रांगसौख्यं विलासादिकं च॥ रिपोर्नाशनं

खेतीमें लाभ सुख हो और सवारीका सुख हो पृथ्वीका लाभ सुवर्णका लाभ राजाके समान सुख यह फल इस वर्षमें होता ॥४॥ पांचवें घरमें शुक्र होवे तो पुत्रोंकी वृद्धि हो भय, क्लेश, चिंता, आपत्ति इन्होंका नाश हो, शत्रुओंका नाश हो और इस वर्षमें अनेक भोग करे धनाढ्य होवे॥५॥ जिस वर्षमें छठे घर शुक्र होवे उसमें जनोंके साथ विवाद शत्रुको भय कष्ट यह सम्पूर्ण फल होता है और गुप्तचिंता हो शरीरमें पीडा हो शिर नेत्र तथा पेटमें दर्द रहे ॥ ६ ॥ वर्षकुंडलीमें सातवें स्थानमें शुक्र स्थित होवे तो स्त्रीके शरीरमें सुख हो और भोग विलास

मानवानांचसौख्यंभवेद्वस्त्रहेमादिलाभंकरोति ॥७॥मृत्युस्थितोमृत्युसमंमनुष्यंशुक्रःकरोतीह जनापवादम् ॥ ज्वरादिपीडामथभीतिकष्टं नेत्रेचरोगोरिपुभिर्विवादम् ॥ ८ ॥ धर्मस्थितोधर्मकरःकविःस्यान्नरेंद्रतुल्यंचनरंकरोति ॥ सुखप्रदोभूषणवाहनादेर्गोभूहिरण्याम्बरलाभदःस्यात् ॥ ९ ॥ गगनगेभृगुनन्दनसंज्ञकेनृपसमोमनुजोथमहाजयः ॥ भवतिगोधनधान्यसमागमोबहुसुखंकृषिवाहनयोर्मत

का सुख रहे शत्रुका नाश हो और मनुष्योंको सुखकी प्राप्ति तथा सुवर्ण वस्त्रादिकोंका लाभ हो॥७॥आठवें घरमें शुक्र होय तो मृत्युके समान दुःख करे मनुष्योंकी निंदाके साथ क्लेश करावे ज्वरादिकोंकी पीडा, भय, कष्ट, नेत्ररोग, शत्रुसे दंगा, फिसाद यह फल होता है ॥ ८ ॥ नवमें घरमें शुक्र होवे तो धर्मकी वृद्धि, राजाके समान सुख,आभूषण, सवारी,गौ, भूमि, सुवर्ण, वस्त्र इन्होंका लाभ करे ॥ ९ ॥ दशवें घरमें शुक्र होय तो वह मनुष्य राजाके समान सुखी हो महान् जयकी प्राप्ति हो. गौ, धान्य, सवारी, खेतीके काम इन्होंसे बहुत सुखकी

म् ॥ १० ॥कविर्लाभगोलाभकृत्स्वर्णकस्य जयंमानवानांकरोतीहवर्षे ॥ सुतानांविवृद्धिं सुखंराजपक्षाद्रिपूणां विनाशंतथामित्रवृद्धिम् ॥ ११ ॥ व्ययगतभृगुजेस्यात्सद्व्ययो वात पीडारिपुजनप्रतिवादोनेत्रयोश्चापि रोगः ॥ भवतिनृपभयंवैशोकमोहादिकष्टं ज्वरवमनविकारीमृत्युतुल्योनरश्च॥ १२॥इतिशुक्रफलम् ॥ अथशनिफलम्॥ मूर्तिस्थितोरविसुतः सुतलाभकारीह्युच्चस्थितःस्वभवनस्यकरोतिवृद्धिम्॥

प्राप्ति होवे ॥ १० ॥ जिनके ग्यारहवें घरमें शुक्र होवे तो सोनाका लाभ हो और उन मनुष्योंको इस वर्षमें विजयलाभ होवे पुत्रोंकी वृद्धि हो राजद्वारसे सुखकी प्राप्ति हो शत्रुओंका विनाश और मित्रजनोंकी वृद्धि होवै ॥ ११॥ बारहवें स्थानमें शुक्र होवे तो अच्छे काममें खर्च हो और वातकी पीडा हो शत्रुजनोंके साथ विवाद हो नेत्रोंमें रोग हो राजासे भय हो शोक मोह, कष्ट, ज्वर, वमन, मृत्युके समान रोग यह सब फल होता है ॥ १२ ॥ ॥ इतिशुक्रफलम ॥ अथ शनिफलम् ॥ लग्न स्थानमें शनि होय तो पुत्रका लाभ हो और उच्चका हो तो

शेषेषुवैरिभयमाशुसवायुपीडांजायांगकष्टमथ शोकविकारकारी॥ १॥ दिवानाथपुत्रोधनस्थो-धनानांविनाशंविधत्तेकुटुंबाद्विरोधम् ॥ प्रकुर्याच्चनेत्रोदरेषुप्रपीडांकफार्तिश्चवर्षेभवेत्सर्वदेहे ॥ २ ॥ रविसुतोभवतीहतृतीयगोरिपुविनाश-करोजयकृन्नृपात्॥ भवतिभूधनलाभकरस्तदा स्वजनबंधुविरोधकरस्तथा ॥ ३ ॥ बंधुस्थान-गतोदिवाकरसुतः स्याद्वायनेकष्टदोभीतिंहा-

अपने घरकी वृद्धि करे अर्थात् शरीरमें सुख बढावे उच्चके विना अन्य राशिका होके लग्नमें स्थित होय तो शीघ्रही वायुकी पीडा, स्त्रीके शरीरमें कष्ट शोकविकार यह फल करता है ॥ १॥ दूसरे घरमें शनि होय तो धनोंका नाश हो और कुटुंबसे वैर हो नेत्र तथा उदरमें पीडा हो और इस वर्षमें संपूर्ण शरीरमें कफकी पीडा रहे ॥ २ ॥ तीसरे घरमें शनि होवे तो शत्रुका नाश हो और राजद्वारसे विजय पावे भूमि और धनका लाभ हो भाई बंधु स्वजनोंके साथ विरोध बढे ॥ ३ ॥ चौथे घरमें शनि स्थित होवे तो उस वर्षमें कष्ट हो भय हो तथा हानि होवे और

निभुपक्रमेचकुरुतेनेत्रोदरेपीडनम् ॥ बंधूनाम
पताडनंप्रकुरुतेलोकापवादंतथा॥लोहाग्नेश्च
भयंपशोश्चमरणंहानिःकृषीणांतथा ॥ ४ ॥
सुतगतःसुतहानिकरःशनिर्भवतिचोदरपीडन
कष्टदः ॥ विकलताबहुतापकरोभवेन्नृपभयंप्र-
करोतिजनेषुच ॥ ५ ॥ षष्ठस्थितोभवति भू
धनलाभकर्तासूर्यात्मजोनृपसमंपुरुषंप्रकुर्या
त् ॥ धान्यांबराणिबहुलानिददातिनित्यंकीर्ते
र्विवर्धनमथार्तिविनाशनंच ॥ ६ ॥ जायास्था

नेत्र तथा उदरमें पीडा हो और भाई बंधु जनोंको दुःख,लोगोंके साथ विवाद (झगडा) लोह तथा अग्निसे भय पशुका मरना खेतीके काममें हानि यह सब फल हों ॥ ४ ॥ पांचवें घरमें शनि होय तो पुत्रकी हानि करै उदरमें पीडा करै शरीरमें कष्ट करै विकलता (दुःख) रहे और बहुत संताप राजासे भय यह फल करता है ॥ ५ ॥ छठे स्थानमें शनि होवे तो भूमि धन-का लाभ होवे और उस मनुष्यको राजाके समान सुखी करै धान्य, अनेक प्रकारके वस्त्र इन्होंका लाभ करे कीर्त्तिको बढावे और पीडाको दूर करे ॥ ६ ॥ सातवें घरमें शनि होवे तो स्त्री-

नगतोदिवाकरसुतःस्यादंगनापीडकोमार्गाङ्गी
तिकरःपशोश्चमरणंराज्याद्भयंव्यग्रता ॥ क्लेशा
नांचविवर्द्धनंप्रकुरुतेमिथ्यापवादंतथादेहेवायु
समुद्भवोथजठरेपीडाभवेद्धायने ॥७॥ निधन
गोनिधनंकुरुतेशनिर्ज्वरविमर्दकफार्तिजनाप
दम् ॥ नृपभयंधनहानिमरेर्भयंभवतितापक
रःपवनोदयः॥८॥भाग्योदयोभाग्यगतःशनि
श्चेन्नृपार्थदःशत्रुविनाशनश्च॥ कीर्तिंश्रियंमान
मथापिदद्यात्सहोदराणांचभयार्तिकारी ॥९॥

को पीडा हो मार्गसे भय हो पशुका मरना हो राज्यसे भय हो चित्तमें घवडाहट रहे क्लेश बढै वृथा लडाई झगडा हो और इस वर्षमें शरीरमें वातकी पीडा रहै और उदरमें बीमारी रहै ॥७॥ आठवें घरमें शनि होय तो मृत्यु करे अथवा ज्वरका खेद कफकी पीड़ा विपत्ति राजासे भय धनकी हानि शत्रुको भय संताप हो और वातकी बीमारी हो ॥ ८ ॥ नवमें घर शनि होय तो भाग्यका उदय हो राजासे लाभ करै शत्रुका नाश करे कीर्ति, लक्ष्मी, मान इन्होंकी द्धि हो और सगे भाइयोंको भय दुःख करे ॥ ९ ॥

गगनगःकृषिहानिकरःशनिःपशुभयंस्वजनोद रपीडनम् ॥ नृपसमंमनुजंचधनागमंप्रकुरुतेक्र यविक्रयलाभकृत् ॥ १० ॥ लाभस्थितो भास्करसूनुरत्रहिरण्यगोभूमिरथाश्वलाभम् ॥ अर्थागमंकीर्तिविवर्द्धनंचसंतानपीडांचकरो- ति वर्षे ॥ ११ ॥ व्ययस्थानगोजायतेचार्कपु त्रो व्ययोव्यग्रताक्लेशचिंतादिकष्टम् ॥ रि पूणां विनाशोभवेदर्थनाशः शिरोत्र्यक्षिपीडे तदा हायनेस्मिन् ॥ १२ ॥ इतिशनिफलम् ॥

दशवें घरमें शनि होय तो खेतीमें हानि करे पशुओंको भय करे अपने सगे संबंधियोंके उदरमें पीडा करे और उस मनुष्यको राजाके समान धनाढ्य करे और खरीदने बेचनेके व्यापारमें लाभ करे ॥ १० ॥ ग्यारहवें घरमें जिसवर्षमें शनि हो उस वर्षमें सुवर्ण, गौ, भूमि, रथ, घोडा इन्होंका लाभ करे धनकी प्राप्ति करे कीर्ति बढावे और संतानको पीडा करे ॥ ११ ॥ बारहवें घरमें शनि स्थित होवे तो खर्च बहुत रहे चित्तमें घबडाहट रहे । क्लेश चिंता आदि कष्ट हो और शत्रुओंका नाश हो

अथराहुफलम् ॥ तमोलग्नगोकामिनीनांचपी
डांरिपोर्भीतिचिंतांव्ययंव्यग्रतांच॥शिरोर्तिंच
भूपाद्भयंमानभंगंतथानेत्ररोगंकरोतीहवर्षे १॥
जनापवादंचकुटुंबगश्चेत्तमस्तदाभूपभयंकरो
तिनेत्रोदरव्याधिभयार्तिदोषान्धनापहारं च
भयं तथाब्दे॥२॥ शशिविमर्दकरश्चतृतीयगो
धनसुतंनरराजसमंनरम् ॥ प्रकुरुतेपशुवाहन
जंसुखंस्वजनपीडनमाशुकरोत्यसौ ॥ ३ ॥

धनका नाश हो शिरमें दर्द नेत्रमें पीडा यह फल इस वर्षमें होताहै ॥ १२ ॥ इति शनिफलम् ॥ अथ राहुफलम् ॥ वर्ष-कुंडलीमें लग्नमें राहु होय तो स्त्रियोंको पीडा हो शत्रुका भय हो चिंता हो द्रव्य खर्च हो चित्तमें घवडाहट रहे शिरमें दर्द रहे राजासे भय हो मानभंग हो और नेत्रमें रोग करे ॥ १ ॥ दूसरे घरमें राहु होय तो लोगोंमें निंदा अनादर करे राजासे भय करे नेत्र वा उदरमें बीमारी होवे भय पीडा दोष धनका नाश, चोर भय यह सब फल इस वर्षमें होताहै ॥ २ ॥ जिसके वर्षमें तीसरे घर राहु हो उस मनुष्यको धन सुखकी प्राप्ति हो और वह राजाके समान हो पशु सवारीका सुख करे और सगे संबंधियोंको शीघ्रही पीडा करे ॥ ३ ॥

हिमांशोरिपुस्तुर्यगोवाहनानांविनाशंतथाभूपप
क्षाद्भयंच ॥ कफार्तिंचकष्टंतथावायुपीडांविदेशे
भ्रमंहायनेऽसौकरोति॥४॥ स्वबुद्धेर्विनाशंसुख
स्थानगश्चेद्धिमांशोरिपुःसंततेःपीडनंच ॥ स्व
कीयोदरेवायुभीतिंभयाप्तिंतथासर्वदाक्लेशचिंतां
करोति ॥ ५ ॥ रिपोर्विनाशोयदिसैंहिकेयःषष्ठ
स्थितःस्यान्नृपतुल्यकारी ॥ गोभूहिरण्याम्बर
लाभकारीधनाप्तिकृद्दुःखविनाशकश्च ॥ ६ ॥
वातप्रमेहादिरथोनराणां गुह्येंद्रियार्तिंचतमोगु

चौथे घरमें राहु होय तो सवारियोंका नाशकरे और राजा लोगोंसे भय करे कफकी पीडा कष्ट वायुपीडा विदेशमें फिरना यह फल इस वर्षमें करताहै॥४॥पांचवें घरमें राहु होवे तो बुद्धिका नाश करे और संतानको पीडाकरे अपने उदरमें वायुकी पीडा और भयकी प्राप्ति करे सदा क्लेश और चिंता करे ॥५॥ छठे घरमें राहु होवे तो शत्रुका नाश हो राजाके बराबर प्रताप बढे. गौ, भूमि,सुवर्ण,वस्त्र इन्होंका लाभ हो धनका लाभ करे और दुःखों-को नष्ट करे ॥ ६ ॥ जिस वर्षमें सातवें घरमें राहु स्थित होवे

निस्थः ॥विषाग्निपीडांचतथांगनानांकष्टंकरोतीहभयंनराणाम् ॥ ७ ॥ छिद्रस्थितोमृत्युसमंमनुष्यंतमस्तथाभूपभयंकरोति ॥ ज्वरातिसारंचकफार्तिदोषं विसूचिकांवायुभयंनराणाम् ॥८॥धर्मस्थितोधर्मविवर्द्धनंस्याज्जयंनृपाच्छत्रुविनाशनंच।भाग्योदयोधान्यधनागमंच करोतिपीडांपशुबांधवेषु ॥ ९ ॥ सिंहीसुतोदशमगःक्रयविक्रयेषुलाभंनरंनृपसमंचकरोतिवर्षे भूपाज्जयंसततमंगलमाशुकुर्यात्कीर्तिश्रियं

तो उन मनुष्योंके वातरोग प्रमेह गुद इंद्रियका रोग (सुजाक आदि) विषबाधा, अग्निभय और स्त्रियोंको कष्ट यह फल करताहै ॥ ७ ॥ आठवें घरमें राहु होय तो उस मनुष्यको मृत्युके समान दुःख हो और राजासे भय हो ज्वर, अतिसार कफकी बाधा, दोष, विसूचिका (हैजा) वातव्याधिका भय यह फल करताहै ॥ ८ ॥ नवमें घरमें राहु स्थित होय तो धर्मकी वृद्धि हो राजासे विजयकी प्राप्ति हो शत्रुओंका नाश हो भाग्यका उदय हो और धन धान्यकी वृद्धि हो पशु और भाई बंधुओंमें पीडा हो ॥ ९ ॥ दशवें घरमें राहु होवे तो खरीदने बेचनेमें फायदा हो और इसवर्षमें वह मनुष्य राजाके

भवतिवाहनहानिकारी॥१०॥लाभस्थितश्चेत्ख
लुसैंहिकेयोनरंनरेंद्रेणसमंकरोति ॥ हिरण्य
गोभूधनसंचयंचशत्रुक्षयंपुत्रभयंतथैव ॥११॥
स्थानभ्रंशोभवतिपवनस्योदयश्चेद्व्ययस्थःसिं
हीपुत्रोरिपुभयमथोमर्त्यमृत्युंविधत्ते॥शीर्षेकर्णे
व्यथनमुदरेनेत्ररोगंनराणांलक्ष्मीहानिःस्वजन
कलहोकामिनीनांचपीडा ॥ १२ ॥ इतिराहु
फलम्॥अथमुन्थाफलम्॥शत्रुक्षयंमानसतुष्टि

समान तेज प्रतापवाला हो हमेशा राजासे जय मिले शीघ्रही मंगलके काम बनें कीर्ति बढे लक्ष्मीकी प्राप्ति हो और सवारीकी हानि हो ॥ १० ॥ ग्यारहवें घरमें राहु होवे तो उस मनुष्यको राजाके समान सुखी करे और सुवर्ण, गौ, भूमि, धन इन्होंका लाभ हो शत्रुका नाश हो और पुत्रोंका भय हो, ॥ ११ ॥ बारहवें घरमें राहु होवे तो स्थानकी हानि होवे और वातव्याधिका उदय हो और शत्रुओंका भय हो तथा मृत्यु हो शिरमें पीडा हो कानमें दर्द उदरमें पीडा नेत्रमें रोग लक्ष्मीकी हानि स्वजन पुरुषोंके साथ लडाई हो स्त्रियोंको पीडा हो ॥ १२ ॥ इति राहुफलम् ॥ अथ मुन्थाफलम् ॥ जिसके वर्षमें लग्नमें मुन्था होवे उसके शत्रुओंका नाश

लाभंप्रतापवृद्धिंनृपतेःप्रसादम् ॥शरीरपुष्टिंविविधोद्यमाश्चददातिसौख्यंमुथहातनुस्था॥ १॥ उत्साहतीर्थागमनं यशश्चस्वबुद्धिसन्माननृपाश्रयश्च ॥मिष्टान्नभोगीतनुपुष्टिकांतिं स्यादर्थभावेमुथहाप्रकुर्यात् ॥ २ ॥ पराक्रमाद्वित्तयशःसुखानिसौन्दर्यसौख्यंद्विजदेवभक्तिः॥ सर्वोपकारास्तनुपुष्टिकांतिर्नृपाश्रयश्चेन्मुथहा तृतीये ॥३॥शरीरपीडारिपुभिः स्ववर्गैर्वैरंम

और मनोरथ सिद्धि हो प्रताप बढे राजाकी मेहरबानी (कृपा-दृष्टि) रहे शरीर पुष्ट रहे अनेक प्रकारके उद्यम और सुख होवें ॥ १ ॥ धन स्थानमें मुन्था होवे तो चित्तमें उत्साह होवे तीर्थाटन होवे यशकी प्राप्ति हो उत्तम बुद्धि, सन्मान, राजाका आश्रय, मीठे अन्न पक्वान्न आदिका भोजन, शरीरमें पुष्टाई कांति यह सब फल होवें ॥२ ॥ जो तीसरे घरमें मुन्था होवे तो पराक्रमसे धनकी प्राप्ति करे और यशकी प्राप्ति करै सुखकी प्राप्ति करै सुंदरता, सुख, ब्राह्मणोंकी भक्ति सबका उपकार शरीरकी पुष्टाई कांति राजाका आश्रय यह सब फल मुन्थाका जानना ॥ ३ ॥ चौथे घरमें मुन्था होवे तो शरीरमें

नस्तापविरोधताच ॥ स्यान्मुंथहायांसुखभाव गायांजनापवादोभयदुःखवृद्धिः ॥ ४ ॥ यन्मुंथहापञ्चमगाब्दवेशे स्वबुद्धितोऽर्थात्मजवित्तलाभः ॥ प्रतापवृद्धिर्विविधोविलासोदेवद्विजार्चानृपतेः प्रसादः ॥ ५ ॥ कृशत्वमंगेषुरिपूदयश्चभयंरुजस्तस्करतोनृपाच्च ॥ काय्यार्थनाशोमुथहारिगाचेद्दुर्बुद्धिवृद्धिःसुकृतेऽनुतापः ॥ ६ ॥ कलत्रबन्धोर्व्यसनारिभीतिरुत्साहभंगोधनधर्मनाशः ॥ द्यूनोपगाचेन्मुथहातनौस्याद्रुजोमनो

पीडा हो शत्रुओंके साथ और अपने मित्र लोगोंके साथ वैर बढे मनमें सन्ताप हो विरोध बढे और मनुष्योंमें निंदा निरादर हो भय तथा दुःखकी वृद्धि हो ॥ ४ ॥ जिस वर्षमें पांचवें घरमें मुन्था हो उसमें अपनी बुद्धिसे धनकी प्राप्ति करे और पुत्र तथा लक्ष्मीकी प्राप्ति हो प्रताप बढे अनेक प्रकारके भोग विलास करे देवता तथा ब्राह्मणोंकी पूजा की जावे राजाकी प्रसन्नता रहे ॥ ५ ॥ छठे घरमें मुन्था होय तो शरीर दुर्बल होजाय शत्रुका उदय हो, रोगहो, चोर तथा राजासे भय हो, काम करे सो बिगड जावे दुर्बुद्धि (खोटी बुद्धि) बढे सुकृतका नाश करे ॥ ६ ॥ सातवें घरमें मुन्था होय तो स्त्रीको

मोहविरुद्धनष्टाः ॥ ७ ॥ भयंरुजस्तस्करतो विनाशोधर्मार्थयोर्दुर्व्यसनामयश्च॥ मृत्युस्थिताचेन्मुथहानराणां बलक्षयःस्याद्गमनंचदूरे॥ ॥ ८ ॥ स्वामित्वमर्थोपगमोनृपेभ्योधर्मोत्सवं पुत्रकलत्रसौख्यम् ॥ देवद्विजार्चापरमंयशश्च भाग्योदयोभाग्यगताहिमुन्था ॥ ९ ॥ नृप प्रसादंस्वजनोपकारंसत्कर्मसिद्धिंद्विजदेवभक्तिम्॥यशोऽभिवृद्धिंविविधार्थलाभंधत्तेम्बर-

तथा सालेको बीमारी करे शत्रुका भय करे मनका उत्साह नष्ट होजावे धन और धर्मका नाशहो, रोग और मनमें मोह होनेसे विपरीत बात करे नष्ट हुआ रहे ॥ ७ ॥ जिसके वर्षमें आठवें घरमें मुंथा हो उसको भय हो पीडा हो चोरसे धनका नाश धर्म और द्रव्यका नाश खोटी बातका व्यसन, रोग, बलका नाश और गमन, यह फल होता है ॥ ८ ॥ जिस वर्षमें नवमें घरमें मुंथा हो उस वर्षमें राजा लोगोंसे किसी कामका अधिकार (मालकी) मिले धर्मका उत्सव पुत्र और स्त्रीको सुख, देवता और ब्राह्मणोंकी सेवा कीजावे परम यश मिले भाग्यका उदय हो ॥ ९ ॥ दशवें घरमें मुंथा होवे तो राजाकी प्रसन्नता हो और अपने भाई बंधुओंका उपकार,श्रेष्ठ कामकी सिद्धि ब्राह्मण और

स्थाद्धुयहापदाप्तिम्॥ १० ॥यन्मुन्थहालाभगता विलाससौभाग्यमैश्वर्यमनःप्रसादः॥ भवन्तिराजाश्रयतोधनानिसन्मित्रपुत्राभिमताप्तयश्च ११ व्ययोऽधिकोदुष्टजनस्य संगोरुजस्तनौविक्रमतोप्यसिद्धिः॥ धर्मार्थहानिर्मुथहाव्ययस्थायदाभवेत्सज्जनतोऽपिवैरम्। १२। इतिपद्मकोशःसमाप्तः

देवताकी भक्ति हो यश बढे अनेक प्रकारके धनका लाभ हो किसी ऊंची पदवीकी प्राप्तिहो ॥ १० ॥ जो ग्यारहवे घरमें मुन्था-पडे तो भोग विलासका सुख ऐश्वर्यकी प्राप्ति मनकी प्रसन्नता राजाके आश्रय होनेसे धनकी प्राप्ति श्रेष्ठ मित्र और अच्छे पुत्रका लाभ यह सब फल होता है ॥ ११ ॥ जिसके वर्षमें बारहवें स्थानमें मुंथा हो तो उसको दुष्ट जनोंकी संगति हो शरीरमें बीमारी हो और पराक्रमकी बात नहीं बनसके याने बलकी हानि धर्म और द्रव्यकी हानि होवे और सज्जन पुरुषके साथभी वैर हो जावे ॥ १२ ॥ इति वेरीनिवासिद्विजशालग्रामात्मजबुधवसीतरामविरचितपद्मकोशभाषाटीका समाप्ता.

चन्द्रबाणाङ्कभूवर्षे फाल्गुने बुधवासरे ।
कृष्णपक्षे गणेशस्य तिथौ टीका कृता त्वियम् ॥

पुस्तकें मिलने के स्थान

१) खेमराज श्रीकृष्णदास,
श्रीवेंकटेश्वर स्टीम प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
खेतवाडी, मुंबई - ४०० ००४.

२) खेमराज श्रीकृष्णदास,
६६, हडपसर इण्डस्ट्रिअल इस्टेट
पुणे - ४११ ०१३.

३) गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास
लक्ष्मीवेंकटेश्वर स्टीम प्रेस,
व बुक डिपो,
अहिल्याबाई चौक, कल्याण
(जि. ठाणे - महाराष्ट्र)

४) खेमराज श्रीकृष्णदास,
चौक - वाराणसी (उ.प्र.)

मुद्रक एवं प्रकाशकः

खेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष : श्रीवेङ्कटेश्वर प्रेस,

खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, मुंबई - ४०० ००४.

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS